जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक संरचनाः एक भौगोलिक अध्ययन

[1]कीर्ति पुण्डीर
[2]डॉ० पंकज कुमार व डॉ० हिमानी

[1]एम०ए० चतुर्थ सैमेस्टर (भूगोल) रोल नं0 241022710006 जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर (उ०प्र०)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, (भूगोल विभाग), जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर (उ०प्र०)

सारांशः– पश्चिमी उत्तर प्रदेश की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर स्थित जनपद सहारनपुर कृषि एवं औद्योगिक संरचना की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण जनपद हैं। जनपद सहारनपुर के कृषि ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक संरचना एक भौगोलिक अध्ययन शीर्षक पर आधारित यह शोध पत्र जनपद की कृषि औद्योगिक संरचना के स्थानिक एवं कार्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं का कृषि उत्पादन तथा अवस्थापनात्मक सुविधाओं और औद्योगिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना है। जनपद में कृषि एवं औद्योगिक विकास के लिए अनुकूल परिस्थिति विद्यमान है, यदि आवश्यकता है तो सतत् और संतुलित विकास हेतु प्रभावी एवं नीतिगत योजना एवं अवस्थापनात्मक सुधार की जिससे यह अध्ययन क्षेत्र योजना निर्माण एवं विकास नीतियों के निर्धारण में अग्रणीय भूमिका में रहे। यद्यपि अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि इसमे कुछ चुनौतियाँ भी है जो विकास की गति को प्रभावित कर रही है। उपरोक्त सभी तथ्यों का विस्तृत अध्ययन ही शोध–पत्र का मूल उद्देश्य है।

[[1]कीर्ति पुण्डीर [2]डॉ० पंकज कुमार व डॉ० हिमानी । **जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक संरचनाः एक भौगोलिक अध्ययन** । *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2026; Volume 2, Issue 1 (April-June): Page Number: 1-8. ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 6.489

Keywords: Online Education, Web-based Education, Educational Web Portals, Non-English, Speaking Scholar

प्रस्तावनाः– जनपद सहारनपुर एक कृषि की प्रधानता रखने वाला जनपद है। यहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की संरचना मुख्यतः कृषि एवं उससे सम्बन्धित गतिविधियों पर आधारित है। समय के साथ–साथ जनपद में अवस्थापनात्मक संरचना के विकास ने इस व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए है। जनपद सहारनपुर में कृषि एवं उद्योग दोनों का समन्वित विकास देखने को मिलता है। यह अपनी उपजाऊ मिट्टी, समृद्ध जल संसाधनों एवं अनुकूल जलवायु के कारण कृषि उत्पादन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। साथ ही काष्ठ–शिल्प चीनी उद्योग विभिन्न प्रकार के लघु कुटीर उद्योग की दृष्टि से प्रदेश अपनी पहचान बनाए हुए हैं। वर्तमान समय में सतत विकास की संकल्पना के अर्न्तगत कृषि एवं उद्योग के मध्य सन्तुलन बनाए रखना अत्यन्त ही आवश्यक हो गया है। जनपद में यह संतुलन किस सीमा तक स्थापित हो सकता है तथा इसके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियाँ विद्यमान है। यह इस शोधपत्र का मुख्य पक्ष है। अतः यह अध्ययन न केवल जनपद की विकास की वर्तमान स्थिति का स्पष्ट अवलोकन करेगा अपितु भविष्य की नीतिगत योजना निर्धारण में भी सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन का उद्देश्यः– प्रस्तुत शोध–पत्र के निम्न लिखित उद्देश्य है (1) जनपद सहारनपुर की भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना (2) कृषि संरचना एवं फसल प्रतिरूप का अध्ययन करना, (3) औद्योगिक संरचना एवं वितरण का अध्ययन करना (4) जनपद में अवस्थापनात्मक संरचना का मूल्यांकन करना (5) कृषि एवं उद्योग के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन करना (6) नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

विधितन्त्रः– प्रस्तुत शोध–पत्र को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकडों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकडे शोधार्थी द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन, व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्रश्नावली व अनुसूची, पर्यवेक्षण, सर्वेक्षण तथा अन्वेषण के माध्यम से प्राप्त किये गये हैं। द्वितीयक आँकडों का संकलन सम्बन्धित विभागों एवं कार्यालयों द्वारा प्रकाशित एवं अप्रकाशित आख्या का प्रयोग करके, जिला साख्यिकी पत्रिकाएँ जिला गजेटियर्स शोध–पत्र, शोधग्रन्थ, पत्रिकाएँ, समाचार–पत्रों आदि से किया गया है। इसी के साथ –साथ आरेखों के माध्यम से भी समस्या के स्तर को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

क्षेत्र परिचयः– सहारनपुर जनपद उत्तर–प्रदेश राज्य के उत्तर पश्चिम किनारे पर स्थित प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जनपद है। जनपद का विस्तार 29°34′ उत्तरी अक्षांश से 30°24′ उत्तरी अक्षांश तथा 77°07′ पूर्वी देशान्तर से 77°57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 3689 वर्ग किमी० है। इसके उत्तर में हिमालय की शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ, पश्चिम में यमुना नदी दक्षिण में शामली व मुजफ्फरनगर जनपद की प्रशासकीय सीमाएँ हैं। सम्पूर्ण जनपद पाँच तहसील और 11 विकासखण्डों में बटा हुआ है। वर्ष 2011 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 34,66,382 है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 1.73 प्रतिशत है।

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

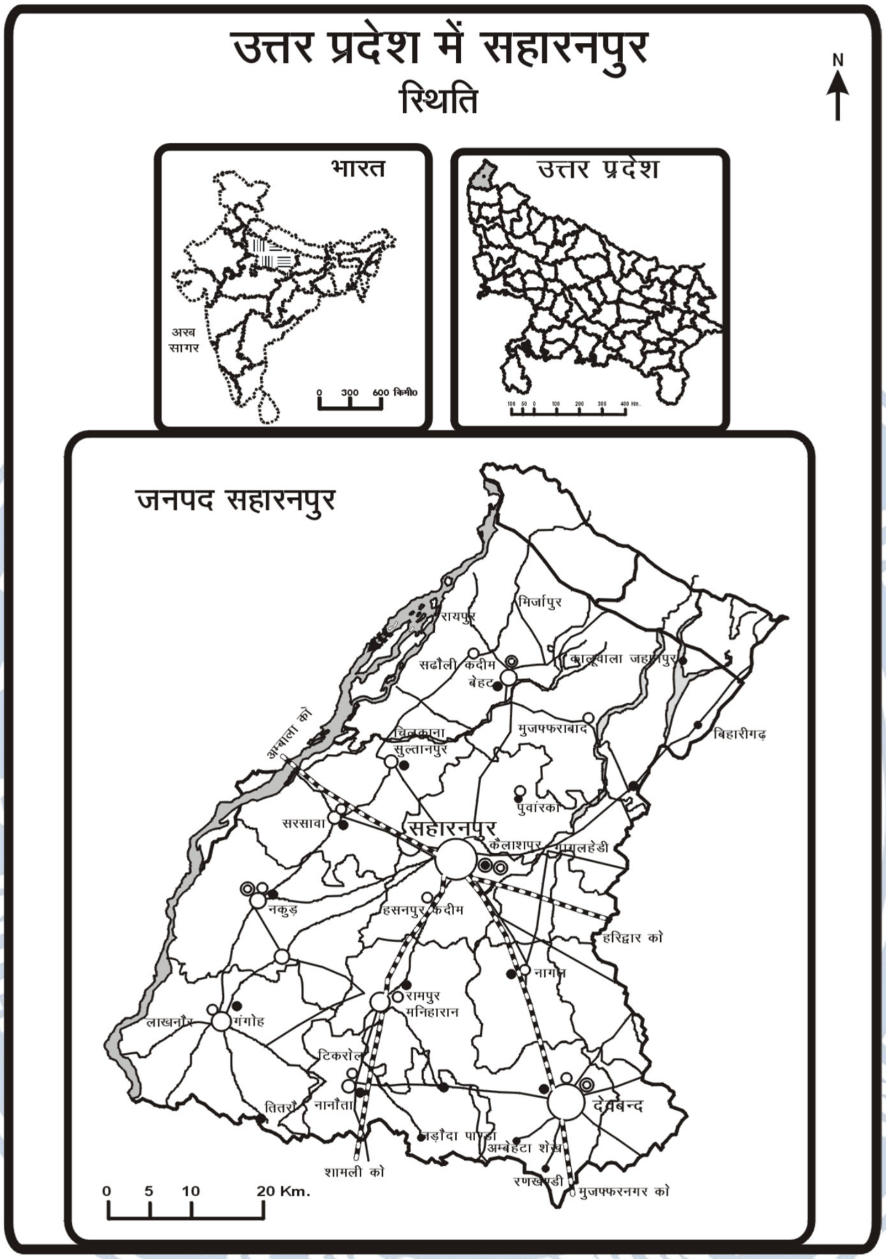

भौतिक स्वरूपः— सहारनपुर जनपद ऊपरी गंगा मैदान का अभिन्न अंग होते हुए भी धरातलीय विभिन्नताओं से सुसज्जित है । यदपि जनपद का अधिकांश भाग समतल जलोढ़ मैदान का भाग है, जो अत्यन्त ही ऊपजाऊ है परन्तु साथ ही साथ यहाँ उप—पहाड़ी क्षेत्र भी पाया जाता है, जनपद का सबसे ऊँचा भाग उत्तर पश्चिम भाग में स्थित रहना गॉव (345 मीटर) तथा सबसे निचला भाग दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित आखनोर खेडी गाँव (247) मीटर है। यहाँ की प्रमुख नदियाँ यमुना, हिंडन, पॉवधोई तथा ढमोला है। धरातलीय दशा एवं जलप्रवाह सम्बन्धी विशेषताओं के आधार पर जनपद को चार भौतिक प्रदेशों, शिवालिक पहाड़ी प्रदेश, उप पहाड़ी भावर या घाड प्रदेश, बांगर प्रदेश तथा खादर प्रदेश में बाँटा जा सकता है।

जनपद में कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक सुविधाएँः— बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु कृषि उत्पादन बढाने के उपायों की शुरुआत भारत सरकार द्वारा की गयी और औद्योगिक विकास के लिए भी एक आधार प्रदान किया गया। कृषकों के लिए सिचाई की सुविधा तथा कृषि अयोग्य भूमि को कृषि योग्य तैयार करने का प्रयास किया गया। भूमि सुधार हेतु विभिन्न कार्यक्रम

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

चलाये गये। सामुदायिक विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। कृषको को संस्थागत ऋण सुविधाएँ प्रदान करने के विस्तार हेतु राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण बैंक की स्थापना ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि विकास योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन किसान क्रेडिट कार्ड योजना कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु भारत सरकार ने लागू की है। इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों को लागू करने का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करना है। समन्वित विकास हेतु कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक सुविधाओं के अध्ययन की निम्न प्रकार से व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है।

1. परिवहनः– किसी भी क्षेत्र के विकास में परिवहन के साधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। यह ग्रामीण आर्थिक विकास का प्रमुख आधार है। परिवहन संसाधन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के मध्य सेवाओं के आदान प्रदान के प्रमुख स्रोत हैं। जनपद में जिन श्रेणी में परिवहन की सुविधाएँ प्राप्त है, उन क्षेत्रों का सामाजिक आर्थिक विकास उच्च स्तर पर है, जबकि जिन क्षेत्रो में परिवहन सुविधाओं का अभाव है, वहाँ पर विकास का स्तर निम्न है। अध्ययन क्षेत्र में पक्की सड़कों का विवरण निम्न प्रकार है।

जनपद सहारनपुर में पक्की सड़कों की लंबाई किमी० में

क्रम सं0	मद	लम्बाई	प्रतिशत
1	लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत	3885	66.74
2.	स्थानीय निकाय के अन्तर्गत	1102	18.93
3	गन्ना विभाग के अन्तर्गत	615	10.56
4	अन्य विभागों के अन्तर्गत	219	3.76
	कुल योग	**5821**	**100**

स्रोतः– जिला सांख्यिकी पत्रिका सहारनपुर–2011

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनपद में सर्वाधिक सड़कों की लम्बाई लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत है, जो कुल सडको का 66.74 प्रतिशत है जबकि सबसे कम 3.76 प्रतिशत अन्य विभागों जिनमें सिचाई विभाग, वन विभाग, डी०जी०वी०आर० आदि है।

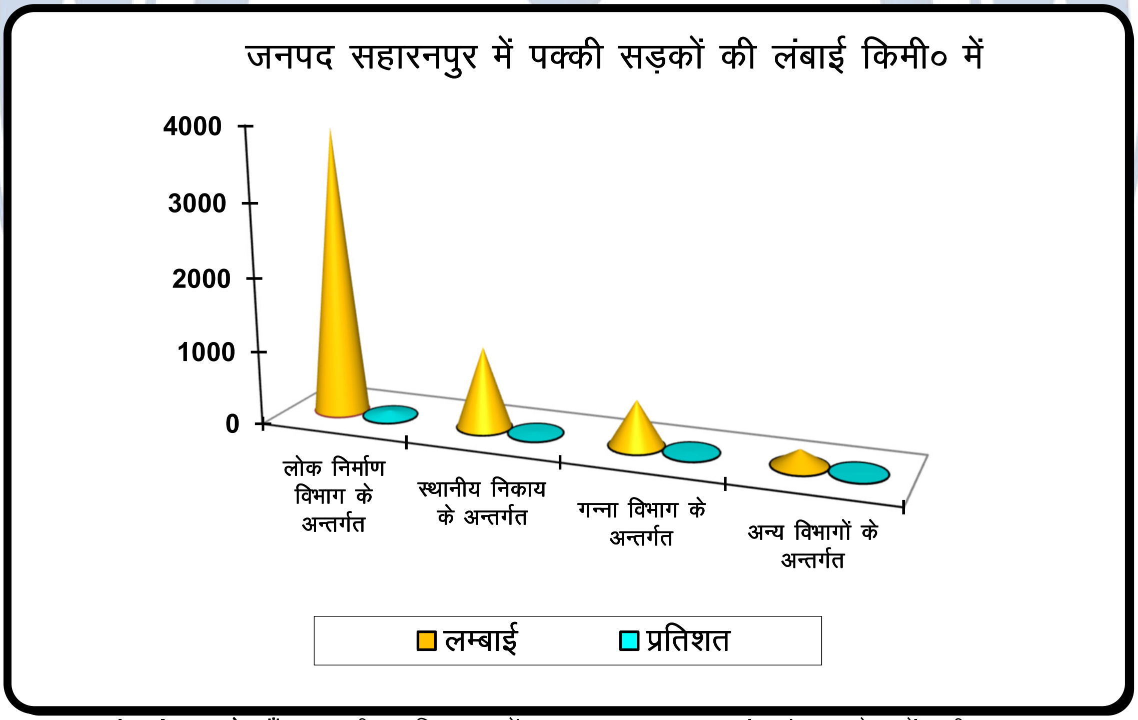

2. यातायात एवं संचार सेवाएँः– ग्रामीण विकास में यातायात एवं संचार सेवाएँ तीव्र गति से परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जनपद सहारनपुर की यातायात एवं संचार सेवाओं की उपलब्धता उन पर जनसंख्या निर्भरता तथा स्थानिक संगठन एवं वितरण को निम्न प्रकार वर्गीकृत कर व्यवस्थित किया गया है।

https://ijioa.com/ cosmospub2023@gmail.com

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

जनपद सहारनपुर में यातायात एवं संचार सेवाओं का स्थानिक वितरण

क्रम सं0	मद	संख्या
1	डाकघर	185
2.	तारघर	8
3	पी0सी0ओ0	282
4	टेलीफान	10782
5	रेलवे स्टेशन/हॉल्ट	10
6	बस स्टेशन /स्टॉप	316

स्रोतः– जिला सांख्यिकी पत्रिका सहारनपुर–2011

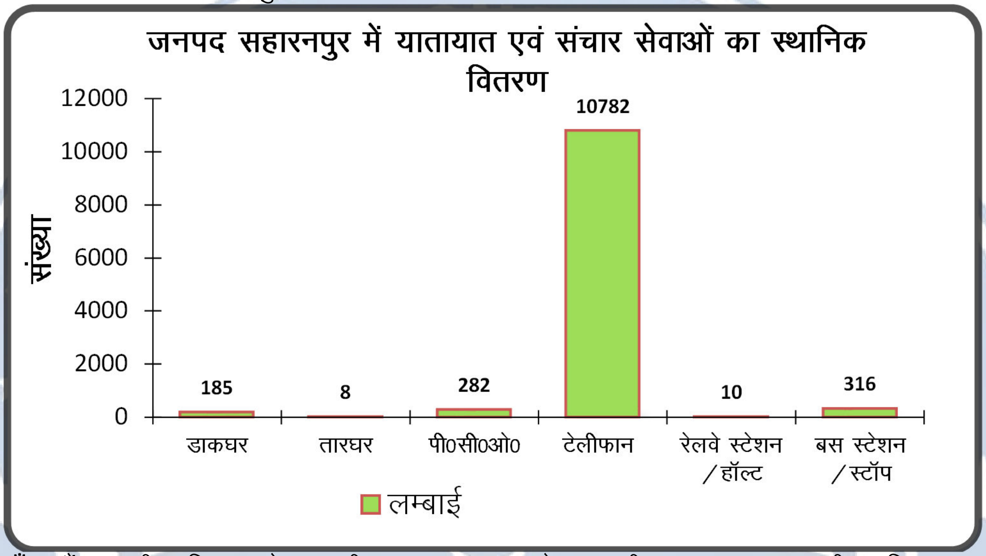

3. बैंकिंग सेवाएँः– बैंक ग्रामीण विकास हेतु सस्ती दर पर ऋण की सुविधा उपलब्ध कराते है। यह लघु एवं कुटीर तथा वृहद्व उद्योग की स्थापना हेतु कृषि विकास हेतु ऋण के साथ–साथ अनुदान भी प्रदान करते है। कृषि विकास हेतु सस्ती दर पर ऋण की सुविधा प्रदान करते है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1991 में कुल 78 राष्ट्रीय कृत बैंक शाखाएँ ग्रामीण क्षेत्र में थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 117 हो गयी थी। जिनका विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट है।

जनपद सहारनपुर में बैंकिग सुविधाओं का विवरण

क्रम सं0	शाखा	1991	2011
1	राष्ट्रीयकृत बैंक	78	117
2.	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखा	–	11
3	अन्य गैर राष्ट्रीय कृत बैंक शाखा	–	23

स्रोतः– जिला सांख्यिकी पत्रिका सहारनपुर–2011

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

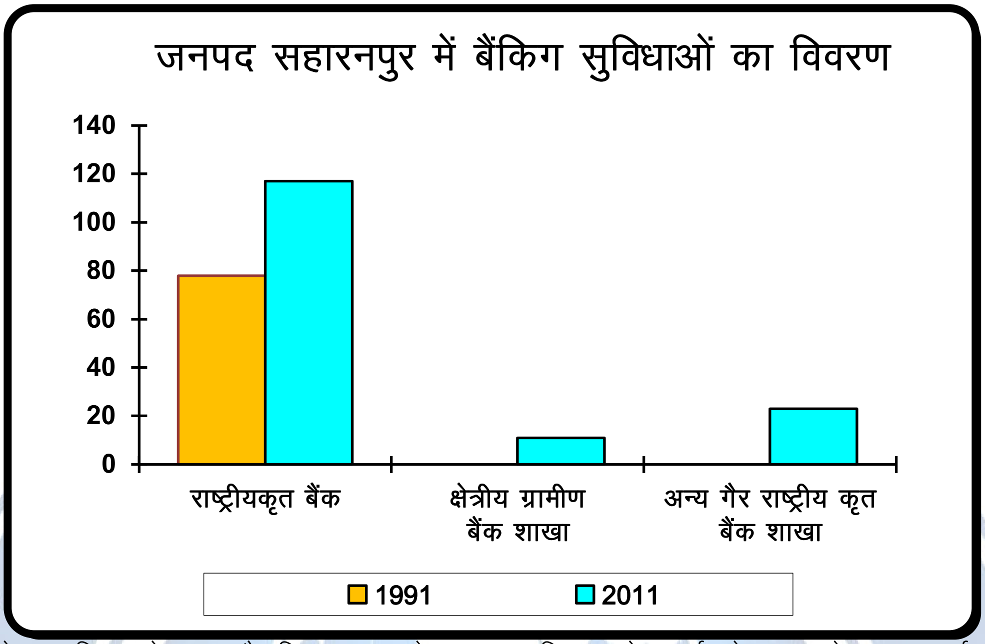

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक सख्या राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाओं की है, वर्ष 1991 से 2011 के मध्य इनकी संख्या में 39 शाखाओं की वृद्धि हुई इसके पश्चात अन्य गैर राष्ट्रीयकृत बैंक शाखा आती है।

4. उर्वरक डिपो/केन्द्रः– विभिन्न फसलों के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि हेतु उर्वरक आदि आवश्यक है। कृषि विकास हेतु उर्वरको का प्रयोग तथा उर्वरक केन्द्रों की स्थानीय उपलब्धता कृषि विकास के साथ–साथ ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्ष 2011 में जनपद में उपलब्ध उर्वरक विक्रय केन्द्रो को निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

जनपद सहारनपुर में उर्वरक विक्रय केन्द्रों का विवरण

क्रम सं0	मद	लम्बाई
1.	सहकारिता	168
2.	कृषि विभाग	11
3.	अन्य विभाग	170
	योग	**358**

स्रोतः– जिला सांख्यिकी पत्रिका सहारनपुर–2011

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है, कि जनपद में वर्ष 2011 के अनुसार उर्वरक वितरण केन्द्रों की कुल संख्या 358 है जिसमे 46.93 प्रतिशत सहकारित विभाग, 3.07 कृषि विभाग तथा 50 प्रतिशत अन्य विभागों के अन्तर्गत सम्मिलित है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक 12.29 प्रतिशत उर्वरक केन्द्र विकास खण्ड मुजफ्फराबाद तथा सबसे कम 4.47 प्रतिशत रामपुर मनिहारान विकास खण्ड में है।

5. डेयरी उद्योगः– यह उद्योग एक पशुपालन आधारित व्यवसाय है। यह किसानों की अतिरिक्त आय का एक प्रमुख स्रोत हैं। इस उद्योग ने ग्रामीण स्तर पर प्रति व्यक्ति आय तथा ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनपद में डेयरी उद्योगों की संख्या, गाय व भैसों की संख्या दुग्ध उत्पादन, संलग्न व्यक्तियों की संख्या, प्राप्त आय तथा ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में डेयरी उद्योगों का स्थानिक वितरण एवं स्थानिक संगठन को प्राप्त करने का प्रयास किय गया है। जनपद में डेयरी उद्योगों के स्थानिक वितरण को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

जनपद सहारनपुर में डेयरी उद्योग का स्थानिक वितरण (2018 के अनुसार)

क्रम सं0	विकास खण्ड	डेयरी संख्या	रोजगार प्राप्त व्यक्ति
1.	सढौली कदीम	37	185
2.	मुजफ्फराबाद	58	290
3.	पुवांरका	48	240
4.	बलियाखेड़ी	32	160

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

5.	सरसावा	44	220
6.	नकुड़	35	175
7.	गंगोह	49	245
8.	रामपुर मनिहारान	28	140
9.	नागल	39	195
10.	नानौता	27	135
11.	देवबन्द	38	190
	योग	**435**	**2175**

स्रोतः– स्वयं सर्वेक्षण पर आधारित

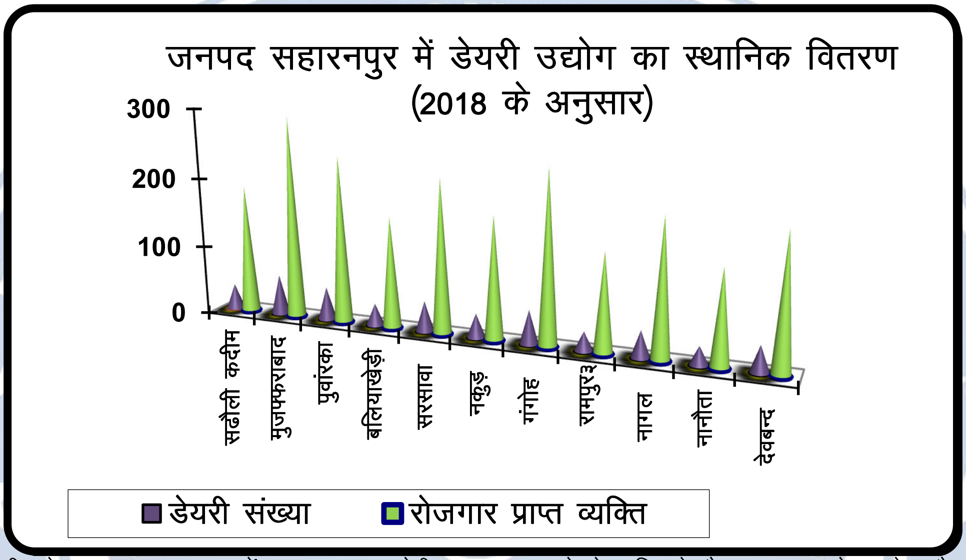

उपरोक्त सारिणी के अनुसार जनपद में कुल 435 डयेरी है, जिसमें 2175 लोगों को रोजगार प्राप्त है। सर्वाधिक डेयरी क्रमशः मुजफ्फराबाद, गंगोह और पुंवारका विकास खण्ड में तथा सबसे कम नानौता में 27 डेयरी है। रोजगार की दृष्टि से भी मुजफ्फराबाद विकास खण्ड आगे है।

6. श्रम बाजारः– श्रम बाजार से तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है, जहॉं पर श्रमिक एवं कार्यकर्ता एक दूसरे से कार्य करने हेतु मिलते है। यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहॉं पर कार्य करने हेतु रोजगार प्रदाता सर्वोत्तम श्रमिक का चयन करके उसे रोजगार प्रदान करता है। श्रम बाजार ग्रामीण क्षेत्र में अल्प विकसित अवस्था में है क्योंकि यहॉं द्वितीयक एवं तृतीयक सेवाओं का अभाव है। उद्योग–धन्धों के अल्प विकसित होने के कारण यहॉं अधिकाशतः श्रमिकों को रोजगार कृषि में मिलता है सहारनपुर क्षेत्र में श्रम बाजार के वितरण को निम्न तालिक के द्वारा दर्शाया गया है।

जनपद में श्रम बाजार का स्थानिक वितरण एवं प्रतिरूप

क्रम सं0	प्रतिरूप	संख्या	श्रमिक
1	पंजीकृत कारखाने	158	5821
2.	लघु औद्योगिक इकाईयॉं	686	2337
3	खादी ग्रामाद्योग इकाईयॉं	69	638

स्रोतः– जिला सांख्यिकी पत्रिका सहारनपुर–2011

उपरोक्त सारणी के अनुसार जनपद में श्रमिक बाजार के अन्तर्गत पंजीकृत कारखानों, लघु औद्योगिक इकाईयॉं तथा खादी ग्रामीण उद्योगों का चयन किया गया है। वर्ष 2011 के अनुसार कुल पंजीकृत कारखाने 158 है, जिनमें 5821 श्रमिक कार्यरत है। सर्वाधिक 56 कारखाने पुवांरका विकास खण्ड में स्थित है। लघु औद्योगिक ईकाइया सर्वाधिक देवबन्द में 81 है। जिसमें 302 श्रमिक कार्यरत है। खादी ग्रामोद्योग इकाई में किसी भी विकास खण्ड में 9 से अधिक नहीं है।

7. उद्यानिकीः– उद्यानिकी कृषि विज्ञान की वह शाखा है जिसमें फल, फूल एवं साग–सब्जियों का अध्ययन किया जाता है। इसमें आनाज फूलो एवं पौधे को उगाने से लेकर उनके व्यापार तक का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत खाद्य एवं अखाद्य दोनों प्रकार की फसलों को सम्मिलित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में उद्यानिकी के अन्तर्गत क्षेत्रफल को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

जनपद सहारनपुर में उद्यानों के अन्तर्गत सम्मिलित क्षेत्रफल (है० में)

क्रम सं0	उद्यान	क्षेत्रफल (है० में)
1.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	36258
2.	उद्यानों का क्षेत्रफल	1333
3.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में उद्यानों का प्रतिशत	0.37

उपरोक्त सारणी के अनुसार जनपद सहारनपुर मे वर्ष 2011 के अनुसार कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में उद्यानों के क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र में 0.37 प्रतिशत क्षेत्रफल उद्यानों के अन्तर्गत सम्मिलित है। इसमें सर्वाधिक 1.04 प्रतिशत विकास खण्ड मुजफ्फराबाद तथा सबसे कम 0.07 प्रतिशत विकास खण्ड गंगोह में है।

शीत भण्डार गृहः– कृषि उपज को एक लम्बी अवधि तक सुरक्षित एवं संरक्षित रखने के लिए, शीत भण्डार गृह का उपयोग करते है। ग्रामीण क्षेत्र में शीत भण्डार गृहों के अभाव में कृषि उपजे बर्बाद हो जाती है अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध शीत भण्डार गृहों तथा उन पर जनसंख्या दबाव एवं स्थानिक वितरण तथा अवस्थिति व स्थानिक संगठन को निम्न सारणी में दिखाया गया है।

जनपद सहारनपुर में शीत भण्डार गृहों का स्थानिक वितरण (2018)

क्रम सं0	शीत भण्डार गृहों का वितरण	योग जनपद
1.	शीत भण्डार गृहों की संख्या	23
2.	औसत अन्तराल (किमी0 में)	12.94
3.	जनसंख्या निर्भरता	104383

स्रोतः– स्वयं सर्वेक्षण पर आधारित

अध्ययन क्षेत्र में कुल 23 शीत भण्डार गृह अवस्थित है, जिस पर 104383 व्यक्ति निर्भर है।

9. बीज विक्रय केन्द्रः– जनपद सहारपुर में बीज विक्रय केन्द्रों में, सहकारिता विभाग के अन्तर्गत बीज विक्रय केन्द्र 6.52 प्रतिशत कृषि विभाग के अन्तर्गत 7.77 तथा अन्य के अन्तर्गत 85.51 प्रतिशत बीज विक्रय केन्द्र है। सर्वाधिक बीज विक्रय केन्द्र 22.46 प्रतिशत पुवाँरका विकास खण्ड में तथा सबसे कम 3.62 प्रतिशत सढ़ौली कदीम विकास खण्ड में है। बीज विक्रय केन्द्रों पर जनसंख्या का सर्वोच्च संकेन्द्रण 41800 प्रति बीज विक्रय केन्द्र विकास खण्ड सढौली कदीम तथा सबसे कम 7403 विकास खण्ड पुवाँरका में है।

जनपद सहारनपुर में बीज विक्रय केन्द्रों का स्थानिक वितरण (2011)

क्रम सं0	बीज विक्रय केन्द्र	योग जनपद	प्रतिशत
1	सहकारिता विभाग	9	6.52
2.	कृषि विभाग	11	7.97
3	अन्य	118	85.51
	योग	**138**	**100.00**

10. बाजार सेवाएँ:– जनपद सहारनपुर में वर्ष 2018 के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में बाजार सुविधाओं में 5.69 प्रतिशत गाँव ऐसे है जिनमे बाजार सुविधाएँ 1 किमी0 से कम दूरी पर, 18.04 प्रतिशत गाँवों में 1 से 3 किमी0 की दूरी पर, 26.33 प्रतिशत गॉवों में 3 उसे 5 किमी0 की दूरी पर, 49.03 प्रतिशत गाँवों में बाजार की सुविधा 5 किमी0 से अधिक पर स्थित है। कृषकों को अपनी उपज को अच्छी दर तथा थोक पर बेचने हेतु कृषि मण्डियों का विकसित होना आवश्यक है। जनपद में 1.13 प्रतिशत गॉव ऐसे है जिनमें कृषि मण्डी की सुविधा उपलब्ध है। 0.16 प्रतिशत गाँवो को मण्डी की सुविधा 1 किमी0 से कम दूरी पर 4. 75 प्रतिशत गाँवो को 1–3 किमी0 की दूरी पर तथा 4.67 प्रतिशत गाँवो को 3–5 किमी0 तथा 92.19 प्रतिशत गॉवो की मण्डी की सुविधा 5 किमी0 से आधिक दूरी पर प्राप्त है। अध्ययन क्षेत्र में दैनिक एवं साप्ताहिक बाजार जनसंख्या की आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करते हैं। जिसमे स्थानीय फसलों एवं उत्पाद तथा पशुओं का क्रय विक्रय किया जाता है।

समस्याएँ एवं चुनौतियाँ:– सहारनपुर जनपद में कृषि तथा औद्योगिक अवस्थापनात्मक संरचना का विकास सराहनीय होने के पश्चात भी अनेक चुनौतियों से भरा पड़ा है। जो जनपद में क्षेत्रीय विकास विशेषकर ग्रामीण विकास की गति को प्रभावित कर रहा है। जिनका समुचित समाधान क्षेत्र के संतुलित विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जैसेः–

1. जनसंख्या वृद्धि एवं पारिवारिक विभाजन के कारण कृषि भूमि का विखंडन हो रहा है, जिसके कारण आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रयोग करना असम्भव है।
2. जल संसाधनो का असंतुलित उपयोग एवं भूजल स्तर मे हो रही भारी गिरावट।
3. रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उपजाऊ क्षमता में कमी आ रही है।
4. अध्ययन क्षेत्र के चीनी उद्योग, कॉगज उद्योग एवं अन्य लघु उद्योगो से निकलने वाले अपशिष्ट पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं।

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

5. दूरस्थ ग्रामीण श्रेणों में परिवहन, विद्युत एवं संचार सेवाओं का अपेक्षाकृत कम विकसित होना।
6. बाजार एवं भण्डारण सुविधाओं का अभाव है।
7. औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकि पिछड़ापन एवं पूंजी का आभाव विकास में बाधक है।

सम्भावनाएँ एवं सुझावः– जनपद की कृषि एवं औद्योगिकी अवस्थापनात्मक संरचना के विकास में अपार सम्भावनाएँ विद्यमान है जनपद की ऊपजाऊ भूमि अनुकूल भौगोलिक दशाएं, विकसित सिंचाई प्रणाली, अनुकूल जलवायु दशाएं जनपद को कृषि एवं उद्योग दोनो ही दृष्टि कोण से अत्यन्त ही उपयुक्त सम्भावनाएँ प्रस्तुत करती है। यदि उपरोक्त परिस्थितियों का योजनाबद्ध ढंग से विकास किया जाए तो जनपद सहारनपुर न केवल क्षेत्र और प्रदेश का अपितु राष्ट्रीय स्तर पर एक आदर्श मॉडल के रूप में सामने आ सकता है।

निष्कर्षः– कृषि और औद्योगिक विकास की दृष्टि से जनपद सहारनपुर एक संतुलित एवं सम्भावनाओं से युक्त क्षेत्र है। कृषि में जहाँ एक और और गन्ना गेहूं और धान जैसी प्रमुख फसलों का व्यापक उत्पादन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है। वहीं दूरी और औद्योगिक दृष्टि से भी सहारनपुर का विकास उल्लेखनीय है। काष्ठ नक्काशी उद्योग, कागज उद्योग, चीनी मिले न सिर्फ जनपद को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाती है, अपितु स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी प्रदान करती है। परिवहन, संचार, विद्युत एवं बाजार सुविधाएँ इस समग्र विकास की आधारशिला है। धीरे–धीरे इनका विकास जनपद में बढ़ता जा रहा है। यदपि भूमि विखंडन भूजल स्तर में गिरावट औद्योगिक प्रदूषण आदि कारक अनेक चुनौतिया भी प्रस्तुत करते है। परन्तु फिर भी हम कह सकते है कि जनपद सहारनपुर में कृषि एवं औद्योगिक अवस्थापनात्मक संरचना के संतुलित विकास की दृष्टि से व्यापक सम्भावनाओं से युक्त है। जिनका योजनाबद्ध ढंग से उपयोग किया जाना आवश्यक है तभी जनपद में आर्थिक प्रगति में तीव्रता आयेगी।

सन्दर्भः

1. बंसल एस० सी०, सहारनपुर भौगोलिक परिदृश्य, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2018
2. बंसल एस० सी० उत्तरप्रदेश का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 2018
3. कुमार नरेन्द्र समन्वित ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन, कलमकार पब्लिसर्स, प्रा०लि०, नई दिल्ली 2022
4. शर्मा के०के० सहारनपुर सन्दर्भ, सहारनपुर, 1986
5. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर सहारनपुर, 1981
6. जिला सांख्यिकी पत्रिका, सहारनपुर 2011–18
7. सामाजिक आर्थिक समीक्षा, सहारनपुर।

Paper received: 12.03.2026 Reviewed: 18.03.2026 Accepted: 28.03.2026 Published: 01.04.2026

IJIOA INTERPRETATION, OBSERVATION AND ANALYSIS